विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष २५४८, आश्विन पूर्णिमा, २८ अक्टूबर, २००४ वर्ष ३४ अंक ५

धम्मवाणी

अनवट्ठितचित्तस्स, सद्धम्मं अविजानतो।
परिप्लवपसादस्स, पञ्ञा न परिपूरति॥

धम्मपद – ३८.

जिसका चित्त अस्थिर है, जो सद्धर्म को नहीं जानता, जिसकी श्रद्धा दोलायमान (डांवाडोल) है, उसकी प्रज्ञा परिपूर्ण नहीं हो सकती।

[धारण करे तो धर्म]

धर्म के प्रति श्रद्धा

(जी-टीवी पर क्रमशः चौवालीस कड़ियों में प्रसारित पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों की इकत्तीसवीं कड़ी)

श्रद्धा कहो, विश्वास कहो, भक्ति कहो, धर्म के पथ पर चलने वाले के लिए यह अत्यंत आवश्यक है। लेकिन भक्ति के साथ-साथ ज्ञान भी हो। भक्ति और ज्ञान के साथ-साथ कर्म भी हो। भक्ति, ज्ञान, कर्म –इन तीनों का उचित समन्वय हो तभी धर्म की सर्वांग संपूर्णता होती है। भक्ति नहीं है तो धर्म लंगड़ा है, चल नहीं सकता। ज्ञान नहीं है तो धर्म अंधा है, देख नहीं सकता। कर्म नहीं है तो धर्म लूला है, काम नहीं कर सकता। तीनों का सामंजस्य हो तो ही धर्म की संपूर्णता है। भक्ति बहुत आवश्यक है, पर समझदारी वाली भक्ति। अंधभक्ति नहीं, अंधविश्वास नहीं, अंधश्रद्धा नहीं। जिस किसी के प्रति मन में श्रद्धा जागी, भक्ति जागी, खूब समझदारी के साथ उसके गुणों को याद करें और उससे प्रेरणा पाकर के वैसे गुण अपने जीवन में उतारने का काम शुरू कर दें, तब भक्ति कल्याणकारिणी हुई। अन्यथा यह भक्ति अंधभक्ति बन जाय तो पांव की बेड़ियां बन जायगी। धर्म के रास्ते एक कदम चल नहीं पाएंगे। अंधेपन में सारा जीवन बीत जायगा। अतः ज्ञान साथ होना ही चाहिए।

किसी को **शिव के प्रति भक्ति हुई।** अरे, भगवान शिव के प्रति भक्ति हुई तो बड़ा मंगल हुआ। शिव शब्द का अर्थ ही मंगल है। मंगल ही मंगल। शिव का कोई चित्र, कोई मूर्ति देखी होगी। कैसे ध्यानावस्थित बैठे हैं। चेहरे पर कितनी शांति है, कितनी कांति है। सिर पर सांप मँडरा रहे हैं। गले में सांप, भुजा पर सांप, कमर में सांप, काल ही काल चारों ओर, फिर भी चेहरे पर कोई शिकन नहीं। निर्भय है, क्योंकि निर्वैर हैं। जो निर्वैर है वह निर्भय है, तभी शिव है। और देखा होगा कंठ नीला है। नीलकंठ है। अपने यहां बहुत-सी कथा-कहानियां प्रतीकों की भाषा में लिखी गयीं। तो कथा 'कथा' है। सुरों और असुरों में बार-बार युद्ध होता रहता था। एक बार उन्होंने मिल करके कहा, चलो हम मिल करके इस समुद्र का मंथन करें और इसमें से जो रत्न प्राप्त हो उसे आपस में बांट लें। दोनों ने मिल करके मंथन किया।

मंथन करते-करते उसमें से अमृत भी निकला और विष भी निकला। अमृत तो सब चाहें पर विष कोई न लेना चाहे। बड़ी कठिनाई खड़ी हो गयी। तो यह शिव कहते हैं, ला भाई, यह विष मुझे दे दे। समाज में झगड़े-फसाद होते हैं तो कोई तो विष को ग्रहण करे। मैं विष पी लूंगा। सारा विष पी गया। ऐसा हलाहल विष, जिससे कंठ नीला हो गया। नीलकंठ हो गया। पर माथे पर गर्मी नहीं आयी उस विष की। माथा शीतल है। प्रतीकों की भाषा है ना! तो बताया माथे पर चंद्रमा है। शीतलता ही शीतलता। और शीतलता बतायी कि सिर में से गंगा निकल रही है, हर-हर गंगा, हर-हर गंगा।

जब साधक शिविरों में आते हैं तो किसी को सातवें दिन, किसी को आठवें दिन, किसी को नौवें दिन यह सिर से पांव तक धर्म की हर-हर गंगा बहने लगती है। अरे, यह धर्म की हर-हर गंगा। ऐसी शांति देती है, क्योंकि निर्मलता देती है। निर्मल होगा तो ही कल्याण होगा। निर्मलता है। विकारों से छुटकारा पा लिया। कभी-कभी विकारों का दमन करना पड़ता है। वे विकार जो हमारे सिर पर चढ़े आ रहे हैं, उनको दबाना पड़ता है। इसीलिए बताया, 'पशुपति' है। क्या पशु है? हमारे भीतर की ये जो पाशविक वृत्तियां है, जो बार-बार हमारे सिर पर चढ़ती हैं। अब यह उन पर सवार हो गया। यानी पशु पर सवार हो गया तो पशुपति हो गया। पर इतने से बात नहीं बनती। आगे चलता है तो दमन नहीं, शमन करना पड़ता है। जड़ों से निकल जाय, तो शमन करता है। इसलिए 'शंकर' कहलाता है। क्योंकि शमन करता है। विपश्यी भी विपश्यना करता है। विकारों को जड़ों से निकाल देता है। काम-वासना जागी तो उसे दबा कर नहीं रह जायगा, भस्म कर देगा। काम को भस्म कर दिया। अरे, प्रतीकों की भाषा है भाई! ऐसे गुण हममें भी आएं ना! जरा-जरा तो आना शुरू हो जाय, तो समझो शिव की भक्ति बड़ी कल्याणकारिणी हुई। नहीं तो वही भिखमंगन भक्ति है –हे शिवजी महाराज, हमें वह दे देना, हमारा यह कर देना, वह कर देना। अरे, किस काम की बात हुई? कौन हमें देने वाला है? हमें जो कुछ प्राप्त होता है, हमारे कर्मों से प्राप्त होता है। बीज कैसे बो रहे हैं, वैसा फल आने वाला है। यह होश रहे तब ना! नहीं होश रहता है तो हे शिवजी महाराज, मुझे यह दे दे, मुझे यह दे दे। तो भक्ति शुद्ध नहीं हुई। निष्काम होनी चाहिए। सकाम भक्ति नहीं।

ठीक इसी प्रकार किसी को **गणेश के प्रति भक्ति हो गयी।** गणपति के प्रति भक्ति हो गयी। प्रतीकों की भाषा को समझें। क्या गणपति होता है? **गणानान्त्वाः गणपति गङ्गवामहे** –गणों का पति है। कभी भारत में गण ही गण, गणराज्य ही गणराज्य थे। तो गणराज्यों का जो अधिपति है, वह गणपति है। राष्ट्र का नायक है, राष्ट्र का नेता है। तो जिन्हें राष्ट्र का नेतृत्व करना है, उनके लिए एक आदर्श है। प्रतीकों में समझाया गया। हाथी का सिर। क्या हाथी का सिर? मेधा इतनी अधिक है, प्रेम इतना अधिक है, बुद्धि इतनी अधिक है जो

सामान्य सिर में नहीं समा सकती। इसलिए हाथी का सिर है। जो राष्ट्र-नायक हो वह बहुत बुद्धिमान होना चाहिए, बहुत मेधावी होना चाहिए। तभी राष्ट्र-नायक होने लायक है, गणपति होने लायक है। हाथी के सिर में सबका सिर, वैसे जैसे कहें हाथी के पांव में सबके पांव। इतना बुद्धिमान, इतना बुद्धिशाली, इतना मेधावी। और बड़े-बड़े दो कान। जिसको राष्ट्र का, गण का, राज्य का नेतृत्व करना है उसके कान बड़े-बड़े हों ताकि सबकी सुने, सबकी सुने। केवल प्रशंसा करने वाले की ही सुने तो अच्छा नायक नहीं, अच्छा गणपति नहीं। निंदा करनेवाला हो या प्रशंसा, जो कोई, जो बात कहता है, उसे खूब ध्यान से सुने। सारे राष्ट्र की आवाज बड़े ध्यान से सुनता है। सुनता अधिक है, बोलता बहुत कम है। तो मुँह के आगे इतनी बड़ी सूंड़ लगा दी। बोलने का काम नहीं। कभी-कभी दुश्मनों को डराना हो तो बड़ी जोर से चिंघाड़ दे, बोले-बाले नहीं। इसलिए इतनी बड़ी सूंड़ लगा दी। शब्दों का सहारा लेकर के राज नहीं करेगा, काम करेगा। बातों का शूर नहीं है, कर्म का शूर है। तो दो हाथ तो हैं ही, यह सूंड़ भी हाथ का काम करने वाली। तो खूब कर्म करता है।

अरे, राष्ट्र नायक इतना कर्मठ नहीं होगा तो राष्ट्र की उन्नति कैसे होगी? बड़ा कर्मठ है तब ऋद्धि आती है, सिद्धि आती है, समृद्धि आती है। गणपति सारे गण का प्रतीक है ताकि उसके द्वारा गण के पास ऋद्धि आये, सिद्धि आये, समृद्धि आये। गणपति में सारा गण समा गया। और बताया कि लंबोदर है। इतना बड़ा उदर है कि सारी समृद्धि को खूब संभाल कर रखता है। राष्ट्र की सारी संपत्ति, सारी निधि खूब संभाल कर रखता है। इसीलिए कहा गया – **निधिनान्त्वा निधिपति गङ्ववामहे।** निधिनान्त्वा – निधिपति है। राष्ट्र की सारी निधि संभाल कर रखता है, सुरक्षित रखता है। कहीं घोटालों में न खो दे। बहुत समझदार है। बड़ी मेहनत से लोग कमा-कमाकर राज्य को 'कर' देते हैं। उनकी मेहनत से प्राप्त हुआ 'कर' कहीं व्यर्थ न हो जाय। बहुत समझदार है। राष्ट्र के हर व्यक्ति का उपयोग हो। राष्ट्र के उत्थान में, राष्ट्र के उद्धार में, राष्ट्र की प्रगति में, राष्ट्र की समृद्धि में हर व्यक्ति का, हर प्राणी का, चाहे छोटे-से-छोटा चूहा ही क्यों न हो। उसका भी उपयोग है। समझदार है। बहुत बुद्धिशाली है। बहुत मेधावी है।

कथा 'कथा' है। होड़ लगी देवों में कि सारी दुनिया का चक्कर काट कर कौन जल्दी आता है? गये भागते हुए सब, दुनिया का चक्कर काटने के लिए। तो मेधावी है ना! अपनी जननी, अपना जनक, बस उनकी परिक्रमा कर ली। अरे, जननी और जनक से ही तो सारा लोक पैदा होता है। तो सारा लोक जननी और जनक में समाया हुआ, उनकी परिक्रमा कर ली। बुद्धिशाली है तो अपना श्रम और समय क्यों नष्ट करे इस सारी पृथ्वी का चक्कर लगाने के लिए? केवल प्रतीक है। सारी सिम्बोलिक लैंग्वेज है। अरे, ऐसे गुण आने शुरू हो जायं तो बड़ा कल्याण हो जाय। लेकिन जब भक्ति अंधभक्ति बन गयी तब कल्याण होना बंद हो गया, मंगल होना बंद हो गया। ज्ञान वाली भक्ति है तो होश जागता है – वैसा ज्ञान, वैसे गुण मुझमें भी आयें। ऐसा बल मुझमें भी आये। ऐसी कर्मठता मुझमें भी आये तब मेरा यह उपास्य देव मुझसे प्रसन्न होगा। अन्यथा कैसे प्रसन्न होगा। खूब समझदारी के साथ भक्ति होनी चाहिए।

किसी को भगवान **राम के प्रति भक्ति हुई।** अरे, बड़े कल्याण की बात हुई। राम के गुणों को याद करे और प्रेरणा प्राप्त करके वैसे गुण अपने जीवन में उतारना शुरू कर दे। मंगल ही मंगल। सबसे बड़ा बेटा है इसलिए बाप ने उसे युवराज के पद पर बैठाया। अब मेरे बाद यह राज्य का उत्तराधिकारी होगा। फिर किसी कारण से विचार बदल गया। नहीं, राज्य का उत्तराधिकारी इसका छोटा भाई भरत होगा और इसे चौदह वर्ष तक वन में रहना पड़ेगा। पिता की आज्ञा शिरोधार्य। आज का कोई राजनेता होता तो हंगामा खड़ा कर देता। भीड़ इकट्ठी करता, मोर्चे निकालता, नारे लगाता। इस गद्दी पर मेरा हक है। मैं बड़ा बेटा हूं। लेकर छोड़ूंगा। राम है ना! अरे, बाप का हक है। बाप ने जिसको दिया, उसको दिया। तो चल पड़ा राजधानी से –

राजीव लोचन राम चले, तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं॥

बाप का राज है, मेरा नहीं। वह चाहे जिसको दे। तो जैसे कोई बटाऊ माने राहगीर आता है, कुछ समय ठहरता है धर्मशाला में, फिर चल पड़ता है। उसके प्रति आसक्त नहीं होता। ऐसे बटाऊ की तरह राज्य छोड़ कर चल पड़ा। बनवास हो गया। और छोटा भाई ऐसा कि जैसे ही उसको पता लगा कि अरे, यह तो बड़ा अनर्थ हुआ। राज्य का अधिकारी तो वह, बाप ने गलत फैसला कर दिया। मैं कैसे मानूं? तो जाता है जंगल में उसके पीछे-पीछे। दोनों भाई मिलते हैं चित्रकूट में और झगड़ते हैं। अरे, दुनिया में भाई-भाई सब जगह झगड़ते हैं लेकिन इनका झगड़ा देखो! और भाई तो झगड़ते हैं कि यह संपत्ति मेरी, यह धन मेरा। ये भाई झगड़ते हैं कि यह संपत्ति तेरी, यह धन तेरा। राज्य का यह वैभव तेरा, मैं वन में रहूंगा। दूसरा कहता है, नहीं, राज्य का यह वैभव तेरा, मैं वन में रहूंगा। नहीं, पिता ने गलत निर्णय किया, मैं वन में रहूंगा। अरे, दो भाई इसलिए लड़ रहे हैं कि यह सारी सुख-संपदा, वैभव-ऐश्वर्य तू भोग। मनुष्य जाति के इतिहास में ऐसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलेगा। राम का ऐसा आदर्श और हम उसके आदर्श का जरा भी अनुकरणन करें, अपने जीवन में जरा भी न उतारें!

दो सगे भाई खूब लड़ते हैं। दोनों में सिविल केसेज चलते हैं, क्रिमिनल केसेज चलते हैं। किस बात पर? कि जब हमारा बँटवारा हुआ था ना, तो मेरे हिस्से की थोड़ी-सी जमीन तेरी ओर चली गयी। हमारा थोड़ा-सा रुपयों का हिस्सा...। खूब लड़ते हैं। एक दूसरे के जान के दुश्मन हैं। और फिर भी दोनों अपने-आपको 'राम-भक्त' कहते हैं। जहां कहीं राम-कथा होगी, दोनों के दोनों आगे जा करके बैठेंगे ताकि लोगों को पता लगे कि हम कितने राम-भक्त हैं। सुबह-सुबह खूब राम-राम का जाप करेंगे। रामायण का पाठ करेंगे। बड़ा प्रदर्शन करेंगे राम की भक्ति का। जबकि उसके जीवन का आदर्श जरा-सा भी अपने जीवन में नहीं उतारा? कैसी भक्ति हुई रे? होश खो बैठे। भक्ति के नाम पर अंधापन ही अंधापन, अंधापन ही अंधापन। अरे, भक्ति इसलिए होती है कि हम अपने उपास्य के गुणों से प्रेरणा पाएं और उनको अपने जीवन में धारण करने का काम शुरू कर दें। भक्ति के साथ ज्ञान होना आवश्यक है और उसके साथ कर्म होना आवश्यक है। तब धर्म संपूर्ण हुआ। यह होश बना रहता है तो भक्ति बड़ी कल्याणकारिणी होती है।

किसी को **कृष्ण के प्रति बड़ी भक्ति जागी।** अरे, कल्याण हो गया। पर कल्याण होने नहीं देते ना! गीता में कृष्ण की वाणी पढ़ते हैं –

अनपेक्षः सुचिर्दक्षः, उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भ परित्यागी, यो मद्भक्त स मे प्रियः॥

यो मद्भक्त स मे प्रियः – मुझे ऐसा भक्त प्रिय है। भगवान कहता है मुझे ऐसा भक्त प्रिय है। कैसा भक्त? **अनपेक्षः** – जिसकी सारी अपेक्षाएं, तृष्णाएं सारी समाप्त हो गयीं। **तण्हानं खयमज्झगा** – सारी तृष्णाओं से मुक्त हो गया, ऐसा 'अनपेक्षः'। **सुचिः** – शुद्ध हो गया, निर्मल चित्त हो गया। **दक्षः** – चित्त निर्मल करने के कार्य में दक्ष हो गया। अपने चित्त को निर्मल करने वाली विद्या में पारंगत हो गया। **उदासीनो** – (पुरानी भाषा है) माने समता में स्थापित हो गया। मन का संतुलन नहीं खोता। हर अवस्था में समता ही समता, हर अवस्था में

नए उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्रीमती मंजु वैश, नई दिल्ली – धम्मसोत की सेवा
२. श्री रामसहाय निम, धम्मधज की सेवा में क्षेत्रीय आचार्य की सहायता
३. श्री जनकराज अधिकारी, नेपाल
४. श्री राजरत्न धाख्वा, नेपाल
५. श्री अमरचंद धारेवा, नेपाल
६. श्री भक्त प्रसाद पौडियाल, नेपाल
७. श्री जयराम राजितकर, नेपाल
८. सुश्री मिला सयामी, नेपाल
९. श्रीमती रीता तामंग, नेपाल
१०. श्री विश्वबंधु थापा, नेपाल

उत्तरदायित्व में परिवर्तन

आचार्य

१-२. श्री श्यामसुंदर एवं श्रीमती कांता खद्दरिया, धम्मबोधि, धम्मलिच्छवी, धम्मउपवन, धम्मविमुत्ति, धम्मसुवत्थि के साथ बिहार एवं झारखंड की सेवा
३-४. श्री रतिलाल एवं श्रीमती चंचल सावला, धम्मवाहिनी की सेवा
5. Mr. Mien Tan, *Acting Teacher-in-Charge of Cambodia*

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्रीमती शीलादेवी चौरसिया, पूर्वोत्तर राज्यों तथा दार्जिलिंग (उत्तरी बंगाल) की सेवा

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

१-२. श्री महासुख एवं श्रीमती मंजु खांधार, दक्षिण अफ्रीका के साथ धम्मविपुल, नई मुंबई की सेवा
३. श्री प्रवीण भल्ला, पंजाब की क्षेत्रीय सेवा के साथ धम्मधज, धम्मतिहाड़, धम्मरक्खक की सेवा

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१-२. श्री शाम एवं श्रीमती सरला भाटिया, नाशिक
3-4. U Htin Aung & Daw Khin Myint May, *Myanmar*
5. Ms. Suvana Soh Siew Ngoh, *Malaysia*
6-7. Mr. Tian Ming Sheu & Mrs. Yuhwen Wang, *Taiwan*
8. Mrs. Alice Pan, *Taiwan*
9. Ms. Greta Gibble, *USA*

बाल शिविर शिक्षक

१. श्रीमती अल्का अशोक पटेल, धुले
२. श्रीमती संगीता बोरसे, धुले
३. डॉ. (श्रीमती) गीता मेहता, भावनगर
४. श्रीमती प्रतिभा पटेल, भावनगर
५. श्री हर्षदराय राठौर, भावनगर
६. श्री जॉन मेंडोन्का, सुरेंद्रनगर
७-८. डॉ. नवीन एवं सुरेखा बवीसी, सुरेंद्रनगर
९. श्री हरजीभाई धुथात्रा, सणोसरा
१०. श्री आर. कन्नन, चेन्नई
११. श्री एम. कन्नन, कल्पक्कम
१२. श्रीमती साधना मराठे, नाशिक
१३. श्री महेंद्र गायकवाड, नाशिक
१४. श्रीमती सुजाता आचार्य, नाशिक
१५-१६. श्री अविनाश एवं श्रीमती नूतन भरमगुंडे, नाशिक
17. & 18. Mr. Graeme Robinson & Mrs. Tara Lerner, *South Africa*
19. Mrs. Alonso Alexandra, *S. A.*
20. Ms. Ingrid Sabbagh, *S. A.*
21. Mr. Gavin Shaskolsky, *S. A.*
22. Ms. Marianne Knuth, *Zimbabwe*
23-24. Mr. Amir and Mrs. Maya Bein, Israel
25. Ms. Marsha Dewar, Canada
26. Ms. Anna Schlink, Australia

समता ही समता। **गतव्यथः** – ऐसे व्यक्ति की सारी व्यथाएं खत्म। दुःख का नामोनिशान नहीं। क्यों? क्योंकि बिल्कुल अनारम्भी हो गया। **सर्वारम्भ परित्यागी** – कुछ आरंभ होने ही नहीं देता। सब त्याग दिया। क्या आरंभ नहीं होने देता? चित्त धारा पर राग आरंभ ही नहीं होने देता, द्वेष आरंभ ही नहीं होने देता। दुर्गुणों का आरंभ होने ही न पाये। किसी भी दुर्गुण का, विकार का आरंभ न हो जाय, तब 'सर्वारम्भ परित्यागी'। **यो मद्भक्त स मे प्रियः** – मुझे तो ऐसा भक्त प्रिय है। – होगा तुम्हें ऐसा भक्त प्रिय, हमको ऐसा भगवान प्रिय नहीं। हमको तो ऐसा भगवान चाहिए कि हम जहां ताली बजा दें, घंटी बजा दें, धूप जला दें, दीप जला दें, पुष्प चढ़ा दें, तुम्हारी प्रशंसा कर दें, बार-बार तुम्हारा नाम रट लें और तुम खुश हो जाओ। बस, ऐसा भगवान चाहिए।

अरे, भाई धर्म में स्थापित कैसे होओगे? चित्त निर्मल करने के लिए कोई काम ही नहीं, अपेक्षाओं से मुक्त कर लेने के लिए कोई काम ही नहीं करते। जब देखो तब राग जगता है, द्वेष जगता है और फिर भी अपने को कृष्ण का भक्त मानते हो! तो भाई, भक्ति कल्याणकारिणी नहीं हुई। भक्ति ज्ञान से भरी हुई हो और कर्म पर उतरे, आचरण में उतरे तब देखो, धर्म के रास्ते आगे बढ़ते जा रहे हैं, शुद्ध धर्म के रास्ते आगे बढ़े जा रहे हैं। उपास्य देव यह है कि वह है, कोई फर्क नहीं पड़ता। शुद्ध धर्म के रास्ते आगे बढ़ते-बढ़ते सबका मंगल ही होता है। मंगल ही होता है। कल्याण ही होता है। स्वस्ति होती है। मुक्ति होती है।

पालि प्रशिक्षण कार्यशालाएं

जयपुर के विपश्यना केंद्र, धम्मथली पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है जिसमें जिज्ञासुओं को पालि भाषा का प्रशिक्षण दिया जायगा। (१) ३ से १४ जनवरी, २००५ तक केवल विदेशियों के लिए (अंग्रेजी में) और (२) १६ से २७-१-२००५ तक भारतीय और नेपालियों के लिए (हिंदी में)।

जो लोग इनमें भाग लेना चाहते हों वे कृपया निम्न पते पर ३० नवंबर २००४ तक अपने आवेदन-पत्र भेज दें। पूर्व स्वीकृति प्राप्त लोगों को ही प्रवेश मिलेगा। स्थान बहुत सीमित है।

पता –विपश्यना केंद्र, पो. बा. २०८, जयपुर- ३०२००१.
ईमेल =dhammjpr@datainfosys.net

आवश्यक सूचना

(पत्रिका के आजीवन सदस्यों के लिए)

पत्रिका के ऊपर लगे लेबल पर जो Expires छप गया है, वह तकनीकी गड़बड़ी के कारण हुआ है। इसका हमें खेद है। इसपर ध्यान न दिया जाय। आपकी पत्रिका नियमित रूप से भेजी जाती रहेगी। – *संपादक*

धम्मगिरि पर दुर्घटना

पिछले दस दिवसीय शिविर के मैत्री दिवस (२ अक्टूबर) के दिन धम्मगिरि पर शिविरार्थी, धम्मसेवक, अन्य कर्मचारी तथा सहायक आचार्य-आचार्या गैस्ट्रोएन्टरायटिस के शिकार हुए। प्राथमिक जांच के अनुसार यह हादसा E-Coli नामक जीवाणु के कारण हुआ जो कि फ्रूट-सलाद (फल की सलाद) द्वारा फैला। लेबोरोटरीज से संपूर्ण जानकारी अभी प्राप्त नहीं हुई है।

जितने भी बीमार साधक अस्पताल में भर्ती कराये गये थे, वे सब अस्पताल से निकलकर सुरक्षित अपने स्थान पर पहुँच गये हैं। हादसे में कोई जैविक हानि नहीं हुई है। इस अत्यंत अप्रत्याशित दुर्भाग्यपूर्ण घटना में जिन लोगों को शारीरिक एवं मानसिक कष्ट पहुँचा, उसके लिए हमें अत्यंत खेद है और उन सभी साधकों एवं उनके परिवारजनों से क्षमायाचना करते हैं। जो-जो साधक एवं अन्य नागरिक अपने दैनिक कार्यों को छोड़ कर इस घटना में मदद के लिए जुट गये, उनके प्रति भी हम अत्यंत आभारी हैं।

इस घटना के पुनरीक्षण के लिए धम्मगिरि पर ९ एवं १० अक्टूबर को मीटिंग हुई। इसमें केंद्र के आचार्य, व्यवस्थापक गण, ट्रस्टीगण एवं धर्मसेवकों ने भाग लिया और ऐसी घटना भविष्य में न हो, इस हेतु सावधानी रखने के लिए समुचित कार्यवाही करने का फैसला लिया गया।

पुनः क्षमायाचना सहित,
व्यवस्थापक मंडल एवं ट्रस्टीगण

म्यंमा की धर्मयात्रा

प्रसन्नता की बात है कि इस वर्ष भी म्यंमा की धर्मयात्रा का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें वहां के तीर्थ-स्थलों, विशेष कर श्वेडगोन पगोडा, मांडले के महामुनि मंदिर, पगान आदि स्थानों पर पू. गुरुजी के साथ सामूहिक साधना का आयोजन होगा। धर्मयात्रा ८ दिसंबर को आरंभ होगी और २० दिसंबर को समाप्त होगी। सभी धर्मयात्री १० दिसंबर के विश्व बौद्ध सम्मेलन में सम्मिलित हो सकेंगे, जिसमें पूज्य गुरुजी का प्रवचन होगा। १२ दिसंबर को धम्मजोति विपश्यना केंद्र पर एक और सम्मेलन होगा, जिसमें पूज्य गुरुजी की धर्मदेशना होगी।

म्यंमा धर्मयात्रा

मुंबई से रंगून और वापसी के लिए एक चार्टर प्लेन की व्यवस्था की गयी है जिसका जाने-आने का बिजनेस क्लास का किराया रु. ४५,०००/- और सामान्य किराया २५,०००/- प्रति व्यक्ति होगा। (मुबई चेक-इन ¬७ दिस. की रात्रि १२ बजे, प्रस्थान – ८ दिस. प्रातः २:१५ पर और वापसी में मुंबई आगमन – २० दिसंबर रात्रि १:१५ (२१-१२-०४)। नियमानुसार जो व्यक्ति एक बार चार्टर प्लेन में आ गया, उसे उसी से वापस आना होगा। इस प्लेन में स्थानाभाव होने की दशा में शेष यात्रियों को नियमित उड़ानों से भेजने की व्यवस्था की जा सकती है।

८ दिसंबर को प्रातःकाल ६:४५ बजे रंगून पहुँचने से लेकर २० दिसंबर के रात्रि पर्यंत म्यंमा के स्थानीय व्यवस्थापक सभी यात्रियों की देखभाल का भार संभालेंगे। म्यंमा की स्थानीय यात्रा (बस, ट्रेन और होटल आदि) का खर्च लगभग २६५ अमेरिकन डालर (लगभग रु. १३,०००-) आयेगा। जो यात्री अन्य कहीं से आकर यात्रा में भाग लेना चाहें, वे अपनी वीसा आदि के लिए संपर्क करें –

Ms. Anna (English name) or Daw Ma Nga (Burmese name),
City Star Hotel, No. 171, Mahabandoola Garden street,
Kyauktada Township, Yangon – Myanmar
Telephone - ++ 95 -1-370922 ~ 24, 250291, 245365
Fax - ++ 95–1-381128
Email – citystar@cityhotel.com.mm
Or info@citystarhotel.com
Website – citystarhotel.com

कृपया ध्यान दें -- (१) सब लोगों का वीसा और पासपोर्ट २० दिसंबर तक के लिए निश्चित रूप से वैध होना चाहिए। वीसा प्राप्त करने की व्यवस्था की गयी है, जिसका आवेदन यथाशीघ्र आ जाना चाहिए। (२) इस यात्रा में केवल साधक ही भाग ले सकेंगे, जिन्होंने कम से कम एक दस दिवसीय शिविर सफलतापूर्वक संपन्न किया हो। (३) आवश्यकतानुसार कार्यक्रमों में परिवर्तन भी हो सकता है। (४) यात्रा के दौरान पंचशील-पालन अनिवार्य होगा। इसका उल्लंघन होने पर किसी को, कहीं से भी यात्रा से बाहर किया जा सकता है। उस दशा में उसे किसी प्रकार रिफंड नहीं दिया जायगा।

भारत अथवा म्यंमा का विपश्यना ट्रस्ट या ट्रस्टी कार्यक्रमों में आकस्मिक बदलाव के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। **वीसा, प्लेन बुकिंग** तथा अधिक जानकारी के लिए निम्न पते पर **संपर्क** करें – श्री अनीश गोयल, ट्रस्टी, ग्लोबल पगोडा फाउंडेशन, या सुश्री सेजल या श्री सम्राट, फोन-९१-(०२२)-५६३२ ४६६४, २२८३ ६३३०, फैक्स-०२२-२२०२ ५८७८.
Email: yatra@globalpagoda.org

दोहे धर्म के

अंध भक्ति ना धर्म है, नहीं अंध विश्वास।
बिन विवेक श्रद्धा जगे, करे धर्म का नाश॥

अंधी होवे भक्ति जब, छूट जाय जब ज्ञान।
डूबे अंधा भक्त भी, डूब जाय भगवान॥

पुस्तक पढ़ पंडित हुआ, कैसा चढ़ा गुमान।
खुले न अंतर के नयम, मिला न सच्चा ज्ञान॥

माने सार असार को, और सार निस्सार।
कहां मिले उस मूढ़ को, शुद्ध धरम का सार॥

मत कर बहस न तर्क कर, मत कर वाद विवाद।
धर्मवान करते नहीं, झगड़े और फसाद॥

भिन्न मतों की मान्यता, दर्शन के सिद्धांत।
धर्म छुटा उलझन बढ़ी, सभी हो गये भ्रांत॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज प्रा. लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

स्रद्धा भक्ति विवेक स्यूं, हुवै निपट निस्काम।
तो चित सदगुण स्यूं भरै, पूगै मंगळ धाम॥

गुण धारण कर इस्ट रा, मुक्त मैल स्यूं होय।
हुवै कामनाहीन जद, भगती निरमळ होय॥

जागै मन मँह प्रेरणा, पढ पोथ्यां रो ग्यान।
जीवन मँह धारण करै, तो होवै कल्याण॥

धोळै-पीळै वस्त्र स्यूं, संत बणै ना कोय।
राग द्वेस जीं रा मिटूया, संत पूज्य है सोय॥

अंधभक्ति स्यूं मानतां, दरसन मिथ्या होय।
निज अनुभव स्यूं जाणतां, दरसन सम्यक होय॥

कोरै बुद्धि बितरक स्यूं, मान्यां सत्य न होय।
अपणै भीतर अनुभवै, सम्यक दरसन सोय॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४८, आश्विन पूर्णिमा, २८ अक्टूबर, २००४**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-,विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१.** Regn. No. AR/NSK-46/2003-05

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) २४४०७६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Website: www.vri.dhamma.org
e-mail: info@giri.dhamma.org